भारत सरकार
जल शक्ति मंत्रालय
जल संसाधन नदी विकास एवं गंगा संरक्षण विभाग
केंद्रीय जल आयोग
जल प्रणाली अभियांत्रिकी निदेशालय

सत्यमेव जयते

Government of India
Ministry of Jal Shakti
Dept. of Water Resources, RD&GR
Central Water Commission
Water System Engineering Directorate

विषय: समाचार पत्रों की कटिंग का प्रस्तुतीकरण-05-दिसंबर-2020

जल संसाधन विकास एवं सम्बद्ध विषयों से संबन्धित समाचार पत्रों की कटिंग को केंद्रीय जल आयोग के अध्यक्ष के अवलोकन के लिए संलग्न किया गया है. इसकी साफ्ट कापी केंद्रीय जल आयोग की वेबसाइट पर भी अपलोड की जाएगी.

संलग्नक: उपरोक्त

(-/sd)

सहायक निदेशक

उप निदेशक(-/sd)

निदेशक (-/sd)

सेवा में

अध्यक्ष, केंद्रीय जल आयोग, नई दिल्ली

जानकारी हेतु: सभी संबन्धित केंद्रीय जल आयोग की वेबसाइट http://cwc.gov.in/news-clipping परदेखें

New Indian Express 05-December-2020

'COMMITTED TO MAKING TN FREE OF WATER-SCARCITY'

EXPRESS NEWS SERVICE @ Madurai/ Sivaganga

CHIEF Minister Edappadi K Palaniswami exuded confidence that his government's strong performance would see AIADMK through in the 2021 hustings. The chief minister was here on Friday to give a major fillip to the water management efforts and works in the field of artificial intelligence, besides a slew of infrastructure facilities.

Reiterating his commitment to making Tamil Nadu a scarcity-free State, the chief minister listed out the giant leaps the State has taken on the integrated water supply scheme front. Later in the day, Palaniswami visited Sivaganga, where he launched Tollscope Phase-II project. The project aims at helping traffic police to enforce laws strictly through the use of artificial intelligence (AI). He then attended a Covid review meeting.

Meanwhile, distancing himself and the party from O Panneerselvam's remarks hinting at a possible tie-up with Rajinikanth, the chief minister said, "Let the actor register and float his party. Till then, I will not make any comment."

CM Edappadi K Palaniswami giving away cows to beneficiaries at an event in Sivaganga on Friday

Millennium Post 05-December-2020

Heavy rains continue to pound TN, deep depression to weaken

MeT dept withdraws red alert for 7 Ker districts as cyclone Burevi weakens

OUR CORRESPONDENT

CHENNAI: Heavy rains continued in Tamil Nadu on Friday leading to inundation of crops and waterlogging in many rural and urban areas while the deep depression over the Gulf of Mannar near Ramanathapuram is likely to weaken into a depression today.

The India Meteorological Department tweeted saying the deep depression over Gulf of Mannar, near Ramanathapuram district's coast remained stationary, about 40 km southwest of Ramanathapuram.

It would remain stationary over the same region and weaken into a depression during the next 12 hours and then into a well-marked low pressure area, it said.

While there was widespread rainfall covering many parts of the state, several regions reported heavy to extremely heavy showers including Kollidam (36 cm, Nagapattinam district), Chidambaram (34 cm, Cuddalore) and over two dozen areas received between 10 and 28 cm rain.

Precautionary measures being taken by fishermen near a sea in view of Cyclone Burevi in Kanyakumari PIC/PTI

Crops including paddy and sugarcane were inundated in districts including Tiruvarur, Thanjavur, Mayiladuthurai, Nagapattinam, Pudukottai and Ariyalur falling under the Cauvery delta zone and complete submergence of agricultural fields was also seen as showers continued for the third successive day.

Ramanathapuram and Tirukovilur (Kallakurichi district) in southern and northern Tamil Nadu respectively were among the regions that received 7 cm rainfall.

While Chennai received moderate rains, Madurantakam near here recorded 10 cm, and rainfall was reported from several other regions including Yercaud in Salem, Sivaganga, Namakkal, Tuticorin, Ranipet and Karur districts as well.

Low-lying residential areas in parts of Madipakkam, Velachery, Pallikaranai and Kovilambakkam here and several other urban and rural areas in districts including Cuddalore saw water entering the neighbourhoods and as a precautionary measure, electricity supply was halted in several districts.

In view of the heavy showers, the ancient Sri Nataraja temple at Chidambaram witnessed flooding of its inner corridors and photographs showing the inundation surfaced on the social media.

The government had already declared Friday a holiday for Kanyakumari, Tirunelveli, Tenkasi, Virudhunagar, Tuticorin, and Ramanathapuram districts in view of the weather system.

On December 3, cyclone 'Burevi' weakened into a deep depression.

Meanwhile, in a relief to Kerala,the Met department has withdrawn the red alert issued for cyclone Burevi and rains in the seven southernmost districts of the state as thedeep depression was likely to weaken further into a depression.

The India Meteorologi-calDepartment (IMD) had in a late night bulletin issued on Thursday withdrawn the red alert and issued a yellow alert for 10 districts of the state.

In a bulletin released on Friday morning, the IMD said the deep depression is likely to move slowly west- southwestwards and cross Ramanathapuram and adjoining Thoothukudi districts in Tamil Nadu during the next six hours with wind speed of 50-60 gusting to 70 kmph.

"It is very likely to weaken further into a depression (wind speed 45-55 kmph gusting to 65 kmph) during next 12 hours," IMD said.

It has issued yellow alerts for the districts of Thiruvananthapuram, Kollam, Pathanamthitta, Alappuzha, Kottayam, Ernakulam, Idukki, Thrissur, Palakkad and Malappuram.

Meanwhile, the Thiruvananthapuram International Airport has rescheduled nine flights scheduled for Friday.

Jansatta 05-December-2020

बचाना होगा छोटी नदियों को

अतुल कनक

नदियों का संकट में होना आमजन के लिए भी संकट का कारण बन सकता है। सन 1951 में हमारे यहां प्रतिव्यक्ति चौदह हजार एक सौ अस्सी लीटर पानी सहजता से उपलब्ध था। लेकिन अनुमान है कि सन 2050 तक पानी की उपलब्धता तीन हजार एक सौ बीस लीटर प्रतिव्यक्ति ही रह जाएगी। यह स्थिति डराती है।

आमतौर पर गर्मी ऋतु में देश के कई हिस्सों से इस आशय की खबरें आती हैं कि छोटी नदियां सूख गईं या कुछ बड़ी नदियों में पानी की मात्रा बहुत कम हो गई। लेकिन दक्षिण पूर्वी राजस्थान के कोटा जिले के सांगोद क्षेत्र में बहने वाली उजाड़ नदी इस वर्ष नवंबर महीने में ही सूख गई। उजाड़ चंबल की सहायक नदी है और अंचल के बहुत सारे गांवों के लिए जीवनरेखा है। आमतौर पर उजाड़ नदी में इतना पानी रहता था कि उससे जुड़े गांवों में आवागमन सुनिश्चित करने के लिए पचपन मीटर लंबा पुल बनाया गया है। लेकिन अपने जल से इलाके को विकास का वरदान सौंपने वाली यह नदी समाज की अपने प्रति असंवेदनशीलता के कारण अब अपने अस्तित्व की रक्षा के लिए छटपटाती-सी प्रतीत होती है।

दरअसल, अपने प्रति संवेदनहीनता का दंश झेल रही उजाड़ नदी देश की अकेली नदी नहीं है। देश में ऐसी सैकड़ों सहायक नदियां होंगी जो इस तरह असमय सूख कर दम तोड़ रही हैं और मनुष्य के लिए जल संकट के खतरे की घंटी बजा रही हैं। लेकिन लगता है हम इस खतरे को अभी भी गंभीरता से नहीं ले रहे हैं। गंगा को तो हमारी मान्यताओं में बहुत पवित्र माना जाता है। सनातन मान्यताओं के अनुसार व्यक्ति को अंतिम समय यदि गंगाजल की दो बूंदों का भी आचमन मिल जाए तो सांसारिक बंधनों से उसकी मुक्ति का मार्ग प्रशस्त हो जाता है। लेकिन देवी माने जाने वाली गंगा नदी स्वयं अब प्रदूषण के दुर्दांत प्रतीत होते असुर से संघर्ष करने पर विवश है। पिछले दिनों यमुना में प्रदूषण के कारण उठे झागों की तस्वीरें सोशल मीडिया पर खूब चलीं। सदा सलिला कही जाने वाली चंबल नदी के पानी को भी एक परीक्षण में कई स्थानों पर पीने योग्य नहीं पाया गया है। कावेरी नदी चालीस प्रतिशत से अधिक अपना जलप्रवाह खो चुकी है, तो कृष्णा और गोदावरी नदी में पानी की मात्रा दो दशक पहले की तुलना में बहुत कम हो गई है। जब देश की महनीय नदियों का यह हाल है तो छोटी नदियों और बरसाती नदियों की स्थिति का अनुमान तो आसानी से लगाया जा सकता है।

यह स्थिति इसलिए चिंता पैदा करती है क्योंकि हमारी पानी की जरूरत का पैंसठ प्रतिशत से अधिक हिस्सा नदियां ही पूरा करती हैं। पानी केवल पीने या रोमजर्रा की जरूरतों को पूरा करने या सिंचाई के काम ही नहीं आता, अपितु औद्योगिक उत्पादन में कच्चे माल के परिशोधन सहित अनेक क्रियाओं में पानी ही जरूरी होता है। ऐसे में जिन देशों को प्रकृति ने नदियों का वरदान दिया है, उन्हें नदियों के अस्तित्व के प्रति संवेदनशील होने की जरूरत थी। लेकिन दुर्भाग्य से विकास की आपाधापी ने नदियों के प्रति हमारी संवेदनशीलता को छीन लिया। हमने नदियों को बचाने और संरक्षित रखने के बजाय के उनके प्रवाह क्षेत्र में ही बस्तियां बनानी शुरू दीं। यह तो समझ आता है कि नदियों के प्रवाह पर बांध बनाना जीवन की जरूरत था, लेकिन नदियों के किनारों पर अतिक्रमण कर लेना या उनमें मनमाने तरीके से गंदगी प्रवाहित करना कैसे उचित कहा जा सकता है? स्थिति यह हो गई कि हम नदियों को देवी मान कर पूजते तो रहे, लेकिन उनकी पवित्रता से खिलवाड़ भी करते रहे। लेकिन ऐसा नहीं है कि नदियों के साथ ऐसा दुर्व्यवहार भारत में ही हुआ। अपने सीमित संसाधनों से आकाश की अथाह ऊंचाई नापने की आपाधापी में कई विकासशील देशों ने नदियों की महत्ता को नजरअंदाज किया है। ब्राजील के रियो-दे जेनेरियो की सारापुई या सुपुई नदी कचरे से इस कदर भर गई है कि उस पर पैदल चला जा सकता है।

बिहार के मुजफ्फरपुर जिले के सभी सोलह प्रखंडों से कोई न कोई नदी गुजरती है। लेकिन इन नदियों में से अधिकांश अपनी दुर्दशा पर आंखें बहा रहीं हैं। नदियों की अत्यधिक संख्या के कारण मिथिला को तो नदियों का मायका तक कह दिया जाता है। लेकिन इससे बड़ी विडंबना और क्या हो सकती है कि नदियां अपने मायके में ही दुख के साथ बह रही हैं। बिहार की बूढ़ी गंडक, लखनदेई, टिमदा, झझा, सियारी, कदाने, बाया, डंडा, मनुषमारा जैसी नदियां या तो दम तोड़ चुकी हैं या दम तोड़ने के कगार पर हैं। झारखंड में पिछली गर्मियों में एक सौ तैंतीस नदियों के सूखने की खबरें आई थीं। पलामू जिले की ही कोयल, सदाबह, अमानत नदियां अस्तित्व के लिए जूझती

दिखीं। गुमला जिले में नदी के प्रवाह क्षेत्र में बच्चे क्रिकेट खेलते हुए दिखे।

किसी नदी के सिकुड़ने या सूखने का दर्द क्या होता है, यह उन इलाकों में जाकर जानना चाहिए जिन इलाकों ने इस स्थिति का सामना किया है। राजस्थान के रेगिस्तानी इलाके से बेहतर किसी नदी के महत्त्व को कहां समझा जा सकता है? कहते हैं कि पौराणिक नदी सरस्वती का प्रवाह इसी क्षेत्र में था। शोधकर्ताओं के अनुसार करीब डेढ़ सौ साल पहले भी राजस्थान के इस इलाके के प्रमुख शहर बीकानेर के पास नाल गांव में एक नदी बहती थी, लेकिन धीरे-धीरे वह लुप्त हो गई। जर्मनी के द मैक्स प्लांक इंस्टीट्यूट फॉर द साइंस ऑफ ह्यूमन हिस्ट्री, तमिलनाडु के अन्ना विश्वविद्यालय और कोलकाता के भारतीय विज्ञान शिक्षा और शोध संस्थान (आइआइएसईआर) जैसे संस्थानों से जुड़े विद्वानों ने यह शोध किया था। इससे कुछ ही दूर स्थित सीकर जिले की साइवार की पहाड़ियों से निकलने वाली साहबी नदी की तो सौ से अधिक उपनदियां थीं। इस नदी के प्रवाह का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इस पर मासनी बांध बनाया गया। लेकिन यह नदी भी अब अपने अस्तित्व के लिए संघर्ष कर रही है। कुछ विद्वानों ने पौराणिक दृष्द्वती नदी के रूप में इसे पहचाना है। सोता, कृष्णावती, दोहन आदि इस नदी की उपनदियां थीं।

एक नदी के रूठने के डर से दन दिनों दक्षिण अमेरिकी देश पैराग्वे भी गुजर रहा है। यहां की राजधानी असुनशियोन के पास से गुजरने वाली नदी परागे ही इस देश को समुद्र से जोड़ने वाला एकमात्र विकल्प थी। इस देश के लिए परागे नदी के महत्त्व का अनुमान इसी बात से लगाया जा सकता है कि इसी नदी के नाम पर देश का नाम भी रखा गया। अमेरिकी अंतरिक्ष एजेंसी- नासा द्वारा पिछले दिनों जारी एक तस्वीर में यह दिखाया गया है कि कैसे राजधानी असुनशियोन के आसपास नदी का इलाका सूख गया है। पराग्वे के लोक निर्माण विभाग के निदेशक जॉर्ज वेगार्रा ने पिछले दिनों कहा भी कि 'नदी सूखने का असर सीधा असर देश की अर्थव्यवस्था पर पड़ रहा है, क्योंकि पराग्वे का बावन फीसद आयात और लगभग पचहत्तर प्रतिशत निर्यात नदी के रास्ते से ही होता है।' नदी के सूखने ने दूरस्थ इलाकों की बस्तियों में पेयजल आपूर्ति को भी प्रभावित किया है।

नदियां मानव सभ्यता की उन्नायक रही हैं। प्रायः सभी प्राचीन सभ्यताओं का विकास किसी नदी घाटी में हुआ है। लेकिन अब नदियां संकट में हैं। नदियों का संकट में होना आमजन के लिए भी संकट का कारण बन सकता है। सन 1951 में हमारे यहां प्रतिव्यक्ति चौदह हजार एक सौ अस्सी लीटर पानी सहजता से उपलब्ध था। लेकिन अनुमान है कि सन 2050 तक पानी की उपलब्धता तीन हजार एक सौ बीस लीटर प्रतिव्यक्ति ही रह जाएगी। यह स्थिति डराती है। देश में जहां छोटी नदियों के प्रवाह क्षेत्र अतिक्रमण के शिकार हो गए हैं, वहीं दो सौ पैंसठ मझोली नदियां संकट में हैं। बड़ी नदियां भी प्रदूषण का शिकार हो रही हैं। ऐसे में समय की सबसे बड़ी जरूरत है कि हम नदियों के प्रति संवेदनशील हों, अन्यथा समूची सभ्यता के लिए आने वाले दिन सचमुच बहुत कठिन होंगे।

Haribhoomi 05-December-2020

बांगो बांध के किनारे 3.20 करोड़ की लागत से 500 एकड़ जमीन पर बनेगा उद्यान

हरिभूमि न्यूज ▶▶ बिलासपुर

पर्यटन विकास के लिए कोरबा में बांगो बांध के किनारे 500 एकड़ भूमि में उद्यान विकसित किया जाएगा। जलसंसाधन संचालनालय से इसके लिए 3.20 करोड़ की राशि मिली है। निर्माण की शुरुआत हो चुकी है। मार्च माह तक काम पूरा कर लिया जाएगा। बागों डैम में पर्यटन की असीम संभावनाएं हैं। प्रति वर्ष हजारों की संख्या में दूर - दूर से यहां पर्यटक प्राकृतिक सौंदर्य का नजारा देखने आते है। खास तौर पर वर्षा समापन होने के बाद जलभराव होने से इसकी छटा और भी अधिक निखर जाती है।

फलदार पेड़ विकसित करने के लिए वन और उद्यानिकी विभाग का सहयोग लिया जाएगा

पहले से बना था उद्यान

वर्तमान में जिस स्थान को उद्यान के लिए चिन्हांकित किया गया है, वहां पहले से ही डैम निर्माण के दौरान उद्यान बनाया गया था। सुरक्षा और बांड्रीवाल के अभाव में यह उजाड़ हो गया था। उद्यान बनने से आसपास के वन क्षेत्र के पेड़ संरक्षित होंगे।

बढ़ेंगे रोजगार के अवसर

बागो डैम किनारे उद्यान मूर्त रूप लेने से पर्यटन विकास को बढ़ावा तो मिलेगा ही साथ ही निकटवर्ती गांव के रहवासियों के लिए रोजगार के अवसर बढ़ेंगे। क्षेत्र के लोग मछुवा संघ बनाकर मछली उत्पादन करते हैं। सैलानियों के आने से उनका व्यवसाय बढ़ेगा। उनके जीवन स्तर में सुधार आएगी।

मार्च तक काम पूरा होगा

पर्यटन को बढ़ावा देने के लिए बांगो डैम के किनारे उद्यान विकसित किया जा रहा है। निर्माण के लिए 3.20 करोड़ की स्वीकृति शासन से मिली है। आगामी वर्ष के मार्च महीने तक काम पूरा कर लिया जाएगा।

केशव कुमार
कार्यपालन अभियंता,
बांगो परियोजना

उद्यान विकास की आवश्यकता वर्षों से महसूस की जा रही थी। राशि स्वीकृति के अभाव में यह आकार नहीं ले पा रहा था। उद्यान विकसित होने से बांध की प्राकृतिक छटा में निखार आएगी। विभागीय अधिकारी ने बताया कि वर्ष भर विकसित होने वाले फूलों के पौधों की रोपनी की जाएगी। इसके अलावा औषधि प्रजाति के पौधे लगाए जाएंगे। फलदार पेड़ विकसित करने के लिए वन और उद्यानिकी विभाग का सहयोग लिया जाएगा। बांगो के डूबा न क्षेत्रों में सत रेंगा को जिला प्रशासन ने पहले से ही विकसित किया है। पर्यटन का विकल्प बढ़ने से जिले में सैलानियों का आगमन बढ़ेगा।

Haribhoomi 05-December-2020

जल जीवन मिशन के कार्यों की समीक्षा के लिए केंद्र सरकार ने झारखंड भेजा दल

हरिभूमि ब्यूरो ▶▶| नई दिल्ली

केंद्र सरकार के जल जीवन मिशन के कार्यान्वयन की मध्य वर्ष की समीक्षा में जिन राज्यों में धीमी चाल और कमी नजर आई है, उनमें राष्ट्रीय जल जीवन मिशन के दल दौरा करके तकनीकी मदद दे रहे हैं। इसी क्रम में राष्ट्रीय जल जीवन मिशन का एक दल झारखंड राज्य के दौरे पर है। केंद्रीय जल शक्ति मंत्रालय ने बताया कि जल जीवन मिशन की योजना के तहत अब तक किए गए कार्यों की मध्य वर्ष की समीक्षा में लिए राष्ट्रीय जल जीवन मिशन का एक दल झारखंड के दौरे पर है।

राज्य के लिए 572.23 करोड़ रुपए आवंटित

2020-21 में केंद्र ने झारखंड को 572.23 करोड़ आवंटित किए हैं। झारखंड में निवेश पर ध्यान देने और कार्यान्वयन में तेजी लाने के लिए तकनीकी सहायता का विस्तार करने हेतु राष्ट्रीय दल राज्य के प्रत्येक जिले और गांवों का दौरा करके ग्राम पंचायतों के अलावा ग्राम जल एवं स्वच्छता समितियों, स्थानीय समुदाय और पीएचईडी अधिकारियों के साथ भी बातचीत करेगी और ग्रामीण घरों में पानी की आपूर्ति प्रदान करने के लिए सामुदायिक भागीदारी और संस्थागत व्यवस्था का भी जायजा लेगी। यह दल रांची में जिला कलेक्टरों, जिला जल एवं स्वच्छता मिशन के अध्यक्ष और दुर्बल सचिव, पेयजल एवं स्वच्छता विभाग के साथ बातचीत करेगी।